13 वर्ष (2013-2025)

आईएएस मुख्य परीक्षा

सामान्य अध्ययन

प्रश्नोत्तर रूप में

प्रश्न-पत्र III

विगत वर्षों के अध्यायवार

हल प्रश्न-पत्र

इन प्रश्न-पत्रों का हल यूपीएससी सिविल सेवा मुख्य परीक्षा के सामान्य अध्ययन पाठ्यक्रम के अनुरूप किया गया है। यह पुस्तक सभी राज्य लोक सेवा आयोगों द्वारा आयोजित परीक्षाओं एवं अन्य समकक्ष परीक्षाओं हेतु भी समान रूप से उपयोगी हैं।

संपादकः एन. एन. ओझा

हलः क्रॉनिकल संपादकीय समूह

CHRONICLE
Nurturing Talent Since 1990

13 वर्ष (2013-2025)

आईएएस मुख्य परीक्षा

सामान्य अध्ययन

प्रश्न-पत्र III प्रश्नोत्तर रूप में

विगत वर्ष (PYQ) अधयायवार हल प्रश्न-पत्र

बुक कोड: 482

संस्करण 2026

मूल्य: ₹199

ISBN : 978-81-995968-1-8

प्रकाशक

क्रॉनिकल पब्लिकेशंस प्रा. लि.

कॉरपोरेट ऑफिस:

ए-1डी, सेक्टर-16, नोएडा-201301 (उ.प्र.)
फोन नं. : 0120-2514610, मो. नं. : 9999056644
E-mail : info@chronicleindia.in

सर्वाधिकार सुरक्षित © क्रॉनिकल पब्लिकेशंस प्रा. लि.: इस प्रकाशन के किसी भी अंश का प्रतिलिपिकरण, ऐसे यंत्र में भंडारण जिससे इसे पुन: प्राप्त किया जा सकता हो या स्थानान्तरण, किसी भी रूप में या किसी भी विधि से- इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या किसी और ढंग से, प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता।

पुस्तक में प्रकाशित सामग्री उपरोक्त विषय पर प्रकाशित पुस्तकों/जर्नल/रिपोर्ट/ ऑनलाइन कंटेंट आदि से संकलित है। लेखक/संकलनकर्ता/प्रकाशक, प्रकाशित सामग्री की मूल लेखन का दावा नहीं करता। प्रकाशित सामग्री को पूर्णत: त्रुटि रहित बनाने का प्रयास किया गया है, फिर भी किसी भी प्रकार के त्रुटि के लिए क्षतिपूर्ति का दावा प्रकाशक/लेखक द्वारा स्वीकार नहीं किया जाएगा। शंका की स्थिति में पाठक स्वयं भारत सरकार के दस्तावेज व अन्य स्रोतों के माध्यम से जांच कर सकते हैं
सभी विवादों का निपटारा दिल्ली न्यायिक क्षेत्र में होगा।

अनुक्रमणिका

सामान्य अध्ययन

III. तृतीय प्रश्न-पत्र

1. अर्थव्यवस्था.....1-65

- भारतीय अर्थव्यवस्था तथा योजना, संसाधनों को जुटाने, प्रगति, विकास तथा रोजगार से संबंधित विषय।
- समावेशी विकास तथा इससे उत्पन्न विषय।
- सरकारी बजट।
- उदारीकरण का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव, औद्योगिक नीति में परिवर्तन तथा औद्योगिक विकास पर इनका प्रभाव।
- बुनियादी ढांचा : ऊर्जा, बंदरगाह, सड़क विमानपत्तन, रेलवे आदि।
- निवेश मॉडल।

2. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी..... 66-93

- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी-विकास एवं अनुप्रयोग और रोजमर्रा के जीवन पर इसका प्रभाव।
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में भारतीयों की उपलब्धियां; देशज रूप से प्रौद्योगिकी का विकास और नई प्रौद्योगिकी का विकास।
- सूचना प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष, कम्प्यूटर, रोबोटिक्स, नैनो-टैक्नोलॉजी, बायो-टेक्नोलॉजी बायो-टेक्नोलॉजी और बौद्धिक सम्पदा अधिकारों से संबंधित विषयों के संबंध में जागरुकता।
- मुख्य फसलें-देश के विभिन्न भागों में फसलों का पैटर्न-सिंचाई के विभिन्न प्रकार एवं सिंचाई प्रणाली-कृषि उत्पाद का भंडारण, परिवहन तथा विणपन, संबंधित विषय और बाधाएं; किसानों की सहायता के लिए ई-प्रौद्योगिकी मिशन; पशु-पालन संबंधी अर्थशास्त्र।
- भारत में खद्य प्रसंस्करण एवं संबंधित उद्योग-कार्यक्षेत्र एवं महत्व, स्थान, ऊपरी और नीचे की अपेक्षाएं, आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन।
- भारत में भूमि सुधार।

3. पर्यावरण एवं आपदा प्रबंधन.....94-129

- संरक्षण, पर्यावरण प्रदूषण और क्षरण, पर्यावरण प्रभाव का आकलन।
- आपदा और आपदा प्रबंधन।

4. सुरक्षा.....130-163

- विकास और फैलते उग्रवाद के बीच संबंध।
- आंतरिक सुरक्षा के लिए चुनौती उत्पन्न करने वाले शासन विरोधी तत्वों की भूमिका।
- संचार नेटवर्क के माध्यम से आंतरिक सुरक्षा को चुनौती, आंतरिक सुरक्षा चुनौतियों में मीडिया और सामाजिक नेटवर्किंग साइटों की भूमिका, साइबर सुरक्षा की बुनियादी बातें, धन-शोधन और इसे रोकना।
- सीमावर्ती क्षेत्रों में सुरक्षा चुनौतियां एवं उनका प्रबंधन-संगठित अपराध और आतंकवाद के बीच संबंध।

◆◆❖◆◆

1

अर्थव्यवस्था

प्र. भारत के विशेष सन्दर्भ में मानव विकास सूचकांक (एच डी आई) तथा असमानता-समायोजित मानव विकास सूचकांक (आई एच डी आई) में भेद कीजिए। आई एच डी आई को समावेशी संवृद्धि का एक बेहतर सूचक क्यों समझा जाता है? (सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2025)

उत्तर: मानव विकास सूचकांक (HDI) और असमानता-समायोजित मानव विकास सूचकांक (IHDI) संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) द्वारा विकसित समग्र मापदंड हैं, जो किसी देश की मानव विकास प्रगति का आकलन करते हैं। HDI औसत उपलब्धियों को मापता है, जबकि IHDI इन उपलब्धियों के वितरण में असमानता को ध्यान में रखता है।

HDI और IHDI में अंतर		
पहलू	**DI**	**IHDI**
संकल्पना	स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर में औसत उपलब्धि को मापता है।	इन आयामों के वितरण में असमानता को ध्यान में रखकर HDI को समायोजित करता है।
सूचकांक	जीवन प्रत्याशा, औसत और अपेक्षित शिक्षा वर्ष, तथा प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय (PPP)।	वही सूचकांक, लेकिन प्रत्येक आयाम में असमानता के अनुसार भारित।
उद्देश्य	यदि सभी व्यक्ति समान हों तो संभावित मानव विकास को दर्शाता है।	असमानता को ध्यान में रखकर वास्तविक मानव विकास को दर्शाता है।
व्याख्या	उच्च HDI सामाजिक समूहों के बीच असमानताओं को छिपा सकता है।	असमानता बढ़ने पर IHDI घटता है; समानता बढ़ने पर स्कोर बढ़ता है।

- UNDP मानव विकास रिपोर्ट 2024 के अनुसार भारत का HDI 0.644 है, लेकिन असमानता को समायोजित करने पर इसका IHDI लगभग 0.462 तक गिर जाता है, जो आय, शिक्षा और स्वास्थ्य परिणामों में असमानता के कारण लगभग 28% की हानि को दर्शाता है।

IHDI को समावेशी विकास का बेहतर सूचक क्यों माना जाता है?

- यह विकास के वितरणात्मक पहलू को उजागर करता है।
- क्षेत्रों, लिंगों और सामाजिक समूहों के बीच असमानताओं को रेखांकित करता है।
- समानता, सामाजिक न्याय और अवसरों तक समावेशी पहुंच को लक्षित करने वाली नीतियों को प्रोत्साहित करता है।

निष्कर्ष: जहां HDI प्रगति को मापता है, वहीं IHDI उस प्रगति में न्यायसंगतता की जांच करता है। इसलिए यह समावेशी और सतत मानव विकास का अधिक सटीक प्रतिबिंब है, विशेषकर भारत जैसे विविध देश के लिए।

प्र. भारतीय अर्थव्यवस्था के समक्ष वे कौन-सी चुनौतियां हैं जब विश्व स्वतंत्र व्यापार तथा बहुपक्षीयता से दूर होकर संरक्षणवाद तथा द्विपक्षीयता की ओर बढ़ रहा है। इन चुनौतियों का सामना किस तरह किया जा सकता है? (सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2025)

उत्तर: वैश्विक व्यापार में संरक्षणवाद और द्विपक्षवाद का उदय भारत जैसी उभरती अर्थव्यवस्थाओं के लिए गंभीर चुनौतियां प्रस्तुत करता है। प्रमुख अर्थव्यवस्थाएं शुल्क, गैर-शुल्क बाधाएं और स्थानीयकरण आवश्यकताएं लागू कर रही हैं, जिससे भारत के निर्यात-आधारित क्षेत्रों-जैसे वस्त्र, इंजीनियरिंग उत्पाद और आईटी सेवाएं-की प्रतिस्पर्धात्मकता घट रही है। यह मेक इन इंडिया और सतत आर्थिक विकास के लक्ष्यों को प्रभावित करता है।

भारत के सामने चुनौतियां

- **निर्यात मांग में कमी:** अमेरिका और यूरोपीय संघ जैसे प्रमुख बाजारों में संरक्षणवादी उपाय भारत की पहुंच सीमित करते हैं।
- **आपूर्ति शृंखला व्यवधान:** द्विपक्षीय व्यापार प्राथमिकताएं भारत के वैश्विक मूल्य शृंखलाओं में एकीकरण को जटिल बनाती हैं।
- **बहुपक्षीय ढांचे का कमजोर होना:** WTO की विवाद समाधान प्रणाली के पतन से भारत बड़े देशों की एकतरफा व्यापार कार्रवाइयों के प्रति असुरक्षित हो जाता है।
- **निवेश अनिश्चितता:** बदलते व्यापार मानदंड निर्यात-उन्मुख उद्योगों में दीर्घकालिक निवेश को हतोत्साहित करते हैं।

भारत के लिए नीति उपाय

- **निर्यात बाजारों का विविधीकरण:** अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ व्यापारिक संबंध बढ़ाना।
- **घरेलू मांग को बढ़ाना:** समावेशी विकास और आय समर्थन नीतियों के माध्यम से उपभोग और रोजगार को मजबूत करना।
- **प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाना:** नवाचार, अनुसंधान एवं विकास और गुणवत्ता मानकों को बढ़ावा देना।

2

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

प्र. भारत में संलयन ऊर्जा कार्यक्रम का पिछले कुछ दशकों में निरंतर क्रमिक विकास हुआ है। अंतर्राष्ट्रीय संलयन ऊर्जा परियोजना- अंतर्राष्ट्रीय तापनाभिकीय प्रायोगिक रिएक्टर (आई टी ई आर) में भारत के योगदान का उल्लेख कीजिए। वैश्विक ऊर्जा के भविष्य के लिए इस परियोजना की सफलता के क्या निहितार्थ होंगे?

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2025)

उत्तर: भारत इंटरनेशनल थर्मोन्यूक्लियर एक्सपेरिमेंटल रिएक्टर (ITER) का एक प्रमुख साझेदार है। यह विश्व का सबसे बड़ा वैज्ञानिक समझौता है, जिसका उद्देश्य संलयन ऊर्जा की व्यवहार्यता प्रदर्शित करना है-एक संभावित स्रोत जो असीमित, स्वच्छ और सुरक्षित ऊर्जा प्रदान कर सकता है।

भारत का ITER में योगदान

- प्लाज्मा अनुसंधान संस्थान (IPR) के माध्यम से लागू, भारत कुल परियोजना लागत का लगभग 9% घटकों और प्रणालियों के रूप में योगदान करता है।

प्रमुख योगदानों में शामिल हैं:

- **क्रायोस्टैट निर्माण:** विश्व का सबसे बड़ा स्टेनलेस-स्टील वैक्यूम चौम्बर, भारत में डिजाइन और निर्मित।
- **इन-वॉल शील्डिंग और कूलिंग वाटर सिस्टम:** सुरक्षित संचालन और रिएक्टर से ऊष्मा हटाने के लिए।
- **डायग्नोस्टिक पोर्ट प्लग और सुपरकंडक्टिंग मैग्नेट सिस्टम:** प्लाज्मा नियंत्रण और परिरक्षण में सहायक।
- **पावर सप्लाई और नियंत्रण प्रणाली:** स्थिर प्लाज्मा संचालन के लिए आवश्यक।
- भारत उन्नत सामग्री अनुसंधान और परिशुद्ध इंजीनियरिंग में भी योगदान देता है।

ITER की सफलता के निहितार्थ

- **ऊर्जा क्रांति:** शुद्ध-धनात्मक संलयन ऊर्जा का प्रदर्शन लगभग असीमित, कार्बन-मुक्त ऊर्जा प्रदान कर सकता है।
- **पर्यावरणीय प्रभाव:** जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम होगी, जिससे जलवायु परिवर्तन और वायु प्रदूषण में कमी आएगी।
- **ऊर्जा सुरक्षा:** ड्यूटेरियम और लिथियम जैसे संलयन ईंधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं, जो दीर्घकालिक वैश्विक ऊर्जा स्थिरता सुनिश्चित करेंगे।
- **वैश्विक समानता:** स्वच्छ और सतत ऊर्जा तक पहुंच समावेशी आर्थिक विकास और वैश्विक सहयोग को बढ़ावा दे सकती है।

निष्कर्ष: ITER के माध्यम से भारत न केवल अपनी तकनीकी और वैज्ञानिक क्षमताओं को मजबूत करता है, बल्कि सतत वैश्विक ऊर्जा के भविष्य को आकार देने में भी योगदान देता है।

प्र. भारत, वर्ष 2047 तक स्वच्छ प्रौद्योगिकी के माध्यम से ऊर्जा स्वतंत्रता कैसे प्राप्त कर सकता है? जैव-प्रौद्योगिकी इस प्रयास में किस प्रकार महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है?

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2025)

उत्तर: भारत की 2047 तक ऊर्जा स्वतंत्रता प्राप्त करने की दृष्टि अमृत काल के अंतर्गत स्थिरता और आत्मनिर्भरता की प्रतिबद्धता के अनुरूप है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जीवाश्म ईंधन से स्वच्छ, स्वदेशी और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की ओर संक्रमण आवश्यक है, जिसे जैव प्रौद्योगिकी में नवाचारों का समर्थन प्राप्त है।

स्वच्छ प्रौद्योगिकी के माध्यम से ऊर्जा स्वतंत्रता के मार्ग

- **नवीकरणीय विस्तार:** पीएम-कुसुम और राष्ट्रीय सौर मिशन जैसी योजनाओं के तहत सौर, पवन और जल विद्युत का बड़े पैमाने पर उपयोग।
- **ग्रीन हाइड्रोजन:** नवीकरणीय ऊर्जा से संचालित इलेक्ट्रोलिसिस द्वारा उत्पादन, भारी उद्योगों का डीकार्बोनाइजेशन।
- **ऊर्जा भंडारण और स्मार्ट ग्रिड:** बैटरी तकनीक और ग्रिड डिजिटलीकरण में निवेश।
- **विद्युत गतिशीलता और ऊर्जा दक्षता:** ईवी अपनाने की गति बढ़ाना, सार्वजनिक परिवहन सुधारना और ऊर्जा-कुशल भवन।
- **कचरे से ऊर्जा और परिपत्र अर्थव्यवस्था:** शहरी और कृषि अपशिष्ट को ऊर्जा और मूल्यवर्धित उत्पादों में बदलना।

जैव प्रौद्योगिकी की भूमिका

- **जैव ईंधन और जैव ऊर्जा:** फसल अवशेषों और शैवाल से द्वितीय पीढ़ी का एथेनॉल, बायोडीजल और बायोगैस।
- **सूक्ष्मजीव इंजीनियरिंग:** इंजीनियर किए गए सूक्ष्मजीव अपशिष्ट CO_2 और बायोमास को स्वच्छ ईंधन और रसायनों में बदल सकते हैं।
- **जैव-आधारित सामग्री:** बायोप्लास्टिक और बायोचार उत्पादन कार्बन पदचिह्न कम कर सकते हैं और परिपत्र जैव-अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दे सकते हैं।

3

पर्यावरण एवं आपदा प्रबंधन

प्र. पेरिस समझौता (2015) के अंतर्गत, भारत की जलवायु वचनबद्धताओं पर समीक्षा लिखिए तथा बताइए कि उन्हें किस प्रकार कॉप26 (2021) में और अधिक दृढ़ता प्रदान की गई है। इस दिशा में, किस प्रकार पहली बार भारत द्वारा प्रस्तावित राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान को 2022 में अद्यतन किया गया है? (सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2025)

उत्तर: भारत की जलवायु प्रतिबद्धताएं पेरिस समझौते (2015) के अंतर्गत उसके प्रथम Nationally Determined Contribution (NDC) के माध्यम से औपचारिक रूप से प्रस्तुत की गईं। यह देश की आर्थिक विकास और जलवायु शमन के बीच संतुलन बनाने की प्रतिज्ञा थी।

प्रारंभिक प्रतिबद्धताएं (पेरिस समझौता, 2015)

- **उत्सर्जन तीव्रता में कमी:** 2005 के स्तर से 2030 तक GDP की उत्सर्जन तीव्रता को 33–35% तक घटाना।
- **नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता:** 2030 तक कुल विद्युत क्षमता का 40% गैर-जीवाश्म स्रोतों से प्राप्त करना।
- **कार्बन सिंक वृद्धि:** 2030 तक वनीकरण और वृक्ष आवरण के माध्यम से 2.5–3 बिलियन टन CO_2 समतुल्य अतिरिक्त कार्बन सिंक बनाना।
- COP26 (2021) में प्रतिबद्धताओं का सुदृढ़ीकरण

ग्लासगो में COP26 के दौरान भारत ने "पंचामृत" प्रतिबद्धताएं घोषित कीं:

- 2030 तक 500 GW गैर-जीवाश्म ऊर्जा क्षमता प्राप्त करना।
- 2030 तक ऊर्जा आवश्यकताओं का 50% नवीकरणीय स्रोतों से सुनिश्चित करना।
- 2030 तक कुल अनुमानित कार्बन उत्सर्जन में 1 बिलियन टन की कमी।
- 2005 के स्तर से 2030 तक GDP की उत्सर्जन तीव्रता में 45% की कमी।
- 2070 तक नेट-जीरो उत्सर्जन प्राप्त करना।

अद्यतन NDC (2022)

- भारत ने 2022 में अपने छक्ब को औपचारिक रूप से अद्यतन किया, जिसमें ये लक्ष्य शामिल किए गए:
  - 2005 के स्तर से 2030 तक GDP की उत्सर्जन तीव्रता में 45% की कमी।
  - 2030 तक लगभग 50% विद्युत क्षमता गैर-जीवाश्म ईंधन स्रोतों से प्राप्त करना।

निष्कर्ष: पेरिस 2015 से COP26 और 2022 के अद्यतन NDC तक की प्रगति भारत की सुदृढ़ जलवायु महत्वाकांक्षा को दर्शाती है, जिसमें नवीकरणीय ऊर्जा विस्तार, उत्सर्जन में कमी और 2070 तक नेट-जीरो की दीर्घकालिक प्रतिबद्धता शामिल है।

प्र. खनिज संसाधन देश की अर्थव्यवस्था के लिए आधारभूत हैं तथा इनका खनन द्वारा शोषण होता है। खनन को पर्यावरणीय आपदा क्यों समझा जाता है? खनन द्वारा पैदा होने वाली पर्यावरणीय आपदा को कम करने हेतु आवश्यक उपचारात्मक उपायों की व्याख्या कीजिए।

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2025)

उत्तर: खनिज संसाधन भारत की आर्थिक वृद्धि, औद्योगिक विकास और अवसंरचना विस्तार के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। खनन, जो पृथ्वी से इन संसाधनों को निकालने की प्रक्रिया है, इस्पात, ऊर्जा, निर्माण और इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे क्षेत्रों के लिए अनिवार्य है। लेकिन खनन स्वभावत: पर्यावरणीय खतरा है क्योंकि यह पारिस्थितिक तंत्र, जल, वायु, मिट्टी और मानव समुदायों पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

पर्यावरणीय खतरे के रूप में खनन

- **भूमि क्षरण:** बड़े पैमाने पर खुदाई से वनों की कटाई, मिट्टी का कटाव और उपजाऊ मिट्टी का नुकसान होता है।
- **जल प्रदूषण:** अम्लीय जल निकासी, भारी धातु प्रदूषण और गाद जमाव से सतही और भूजल की गुणवत्ता प्रभावित होती है।
- **वायु प्रदूषण:** खनिजों के उत्खनन, परिवहन और क्रशिंग से धूल और मशीनों से उत्सर्जन होता है।
- **ध्वनि प्रदूषण:** विस्फोट और भारी मशीनरी संचालन स्थानीय पारिस्थितिकी और मानव बस्तियों को प्रभावित करते हैं।
- **जैव विविधता हानि:** प्राकृतिक आवास नष्ट होते हैं, जिससे वनस्पति और जीव-जंतु का नुकसान होता है।
- **सामाजिक प्रभाव:** समुदाय, विशेषकर आदिवासी, विस्थापित होते हैं और आजीविका व सांस्कृतिक धरोहर खो देते हैं।

पर्यावरणीय खतरे को कम करने के उपाय

- **पर्यावरणीय प्रभाव आकलन (EIA) और प्रबंधन योजनाएं:** खनन से पहले, दौरान और बाद में अनिवार्य।
- **भूमि पुनर्वास और पुनर्स्थापन:** बैकफिलिंग, उपजाऊ मिट्टी की पुन:स्थापना और स्थानीय प्रजातियों से पुनर्वनीकरण।
- **सतत खनन प्रथाएं:** चयनात्मक खनन, in-situ leaching और अपशिष्ट न्यूनकरण।

4

सुरक्षा

प्र. उत्तर-पूर्वी राज्यों में आन्तरिक सुरक्षा एवं शांति प्रक्रिया में कौन-सी प्रमुख चुनौतियां हैं? विगत एक दशक में सरकार द्वारा किए गए विभिन्न सहमति - पत्रों तथा शांति समझौतों के रूप में ली गई पहलों का खाका खींचिए।

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2025)

उत्तर: भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र, जिसमें आठ राज्य शामिल हैं, ने ऐतिहासिक रूप से विद्रोह, जातीय तनाव और सीमा-पार मुद्दों के कारण आंतरिक सुरक्षा चुनौतियों का सामना किया है। इन चुनौतियों ने सामाजिक-आर्थिक विकास और राजनीतिक स्थिरता को बाधित किया है, जिससे इस क्षेत्र में शांति प्रक्रिया सरकार की प्रमुख प्राथमिकता बन गई है।

सुरक्षा चुनौतियों के कारक

- **विद्रोह और उग्रवाद:** NSCN, ULFA और NDFB जैसे सशस्त्र समूह अधिक स्वायत्तता या अलगाव की मांग करते रहे हैं।
- **जातीय और सामुदायिक तनाव:** मणिपुर में मैतेई-कुकी संघर्ष जैसे जातीय झगड़े असुरक्षा और विस्थापन को बढ़ाते हैं।
- **सीमा-पार उग्रवाद और तस्करी:** म्यांमार, बांग्लादेश और भूटान के साथ खुली सीमाएं हथियारों, उग्रवादियों और नशीले पदार्थों की आवाजाही को आसान बनाती हैं।
- **कठिन भूगोल और अवसंरचना की कमी:** दुर्गम स्थलाकृति और कमजोर संपर्क शासन और सुरक्षा संचालन को बाधित करते हैं।
- **नशीली दवाओं की तस्करी और आतंक वित्तपोषण:** Golden Triangle की निकटता क्षेत्र को नशीली दवाओं के व्यापार और उग्रवादी गतिविधियों के वित्तपोषण के प्रति संवेदनशील बनाती है।

पिछले दशक में शांति समझौते और संधियां

- **नगा शांति समझौता (2015):** राजनीतिक आकांक्षाओं को संबोधित किया और क्षेत्रीय अखंडता बनाए रखी।
- **बोडो शांति समझौता (2020):** बोडोलैंड प्रादेशिक क्षेत्र का निर्माण किया, अधिक स्वायत्तता और विकास समर्थन प्रदान किया।
- **करबी-आंगलोंग शांति समझौता (2021):** दशकों के अशांति को समाप्त किया और राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक विकास पर ध्यान केंद्रित किया।
- **ULFA (Independent) शांति समझौता (2023):** असम में विद्रोह समाप्त करने और कैडरों के पुन: एकीकरण का लक्ष्य रखा।
- **NLFT और ATTF शांति समझौते (2024):** त्रिपुरा में शांति बहाल की और विकास पहलों को प्रोत्साहित किया।

शांति पहलों का प्रभाव

- 10,000 से अधिक उग्रवादियों ने आत्मसमर्पण किया और कई समूह मुख्यधारा में शामिल हुए। इन समझौतों ने आर्थिक विकास, शासन में सुधार और क्षेत्र में सुरक्षा को मजबूत किया है।

निष्कर्ष: यद्यपि शांति समझौतों ने उल्लेखनीय प्रगति की है, जातीय विवादों, सीमा-पार प्रभावों और सामाजिक-आर्थिक असमानताओं के कारण चुनौतियां बनी हुई हैं। स्थायी शांति के लिए निरंतर संवाद, समावेशी विकास और मजबूत सुरक्षा तंत्र आवश्यक हैं।

प्र. भारत के समुद्री व्यापार के संरक्षण के लिए समुद्री सुरक्षा क्यों अत्यावश्यक है? समुद्री तथा तटीय सुरक्षा की चुनौतियों तथा आगे बढ़ने के मार्ग पर चर्चा कीजिए।

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2025)

उत्तर: भारत, जिसकी तटरेखा 7,500 किमी से अधिक (हाल ही में Survey of India द्वारा 11,098.81 किमी अद्यतन) है और जो हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) में प्रमुख अंतरराष्ट्रीय समुद्री मार्गों के साथ रणनीतिक रूप से स्थित है, आर्थिक विकास के लिए समुद्री व्यापार पर अत्यधिक निर्भर है। भारत के लगभग 95% व्यापार (आयतन के आधार पर) और 68% व्यापार (मूल्य के आधार पर) समुद्र के माध्यम से होता है। इसलिए समुद्री सुरक्षा आर्थिक हितों की रक्षा, ऊर्जा आपूर्ति सुनिश्चित करने और राष्ट्रीय सुरक्षा बनाए रखने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

समुद्री और तटीय सुरक्षा चुनौतियां

- **समुद्री डकैती और सशस्त्र लूटपाट:** हिंद महासागर और मलक्का जलडमरूमध्य में खतरे।
- **आतंकवाद और तस्करी:** तटीय क्षेत्र आतंकवादी घुसपैठ, हथियार और नशीली दवाओं की तस्करी के प्रति संवेदनशील।
- **समुद्री सीमा विवाद:** EEZ और महाद्वीपीय शेल्फ पर पड़ोसी देशों के साथ विवाद।
- **अवैध, अपंजीकृत और अनियमित (IUU) मछली पकड़ना:** विदेशी जहाजों द्वारा अत्यधिक दोहन।
- **प्राकृतिक आपदाएं और जलवायु जोखिम:** सुनामी, चक्रवात और समुद्र स्तर में वृद्धि।
- **साइबर सुरक्षा खतरे:** बंदरगाहों और शिपिंग का डिजिटलीकरण साइबर हमलों के प्रति संवेदनशील।
- **भूराजनीतिक प्रतिद्वंद्विता:** IOR में बाहरी शक्तियों की उपस्थिति और Strait of Hormuz जैसे सामरिक मार्ग।

आगे का राह

- **नौसेना और तटरक्षक क्षमताओं को मजबूत करना:** निगरानी, गश्त और त्वरित प्रतिक्रिया।